

मेरे द्वार सबके लिए खुले हैं

यह पूछा है मुक्ति ने। अगर न करते होते, तो मुक्ति का क्या होता।

तामसी ने कोई कसूर नहीं किया, न कोई उसने अपराध किया है। तामसी का तो कुल इतना ही अर्थ है कि अभी जीवन की संपदा अंधेरे में छिपी पड़ी है। उसे उघाड़ना है। तो मेरा उपयोग ही इसलिए है। सात्विक तो मेरे बिना भी खोज ले सकता है, तामसी कैसे खोजेगा?

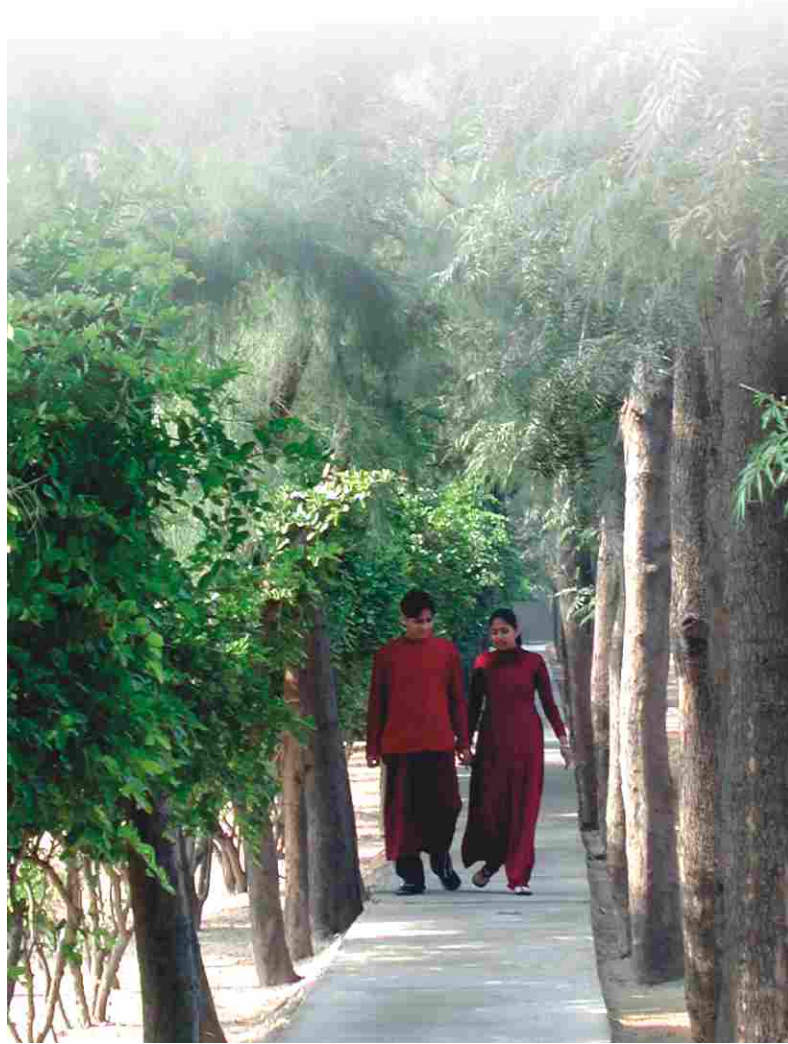
मैंने सुना है कि चीन में एक बहुत बड़ा सदगुरु हुआ, हुवांग-पो। उसके पांच सौ शिष्य थे। बड़ा आश्रम था। पांच सौ भिक्षु उसके पास रहते थे। लेकिन एक भिक्षु बहुत उपद्रवी था। चोर भी था और भी अनेक तरह की नशे की आदतें थीं। किसी तरह योग्य न था भिक्षु होने के। कई बार पकड़ा भी गया, रंगे हाथों भी पकड़ा गया। सारा आश्रम परेशान था कि वह चोरी भी करता, नशा भी करता। कभी शराब पीए हुए चला आता है। बदनामी फैलती पूरे इलाके में कि यह किस तरह का संन्यासी है! शराबघरों में पाया गया है, जुआघरों में बैठा मिला है और भिक्षु है!

गुरु के पास बहुत शिकायतें आती रहीं। हुवांग-पो सुनता और बात टाल देता। लेकिन एक दिन तो हद हो गई। वह शराब पीकर बाजार में किसी से लड़ा, मार-पीट की, किसी का सिर फोड़ दिया। वहां से लोग उसे पकड़े हुए लाए, लहूलुहान और नशे में धुत और गालियां बकता हुआ। उस दिन तो बाकी शिष्यों ने कहा, आज कुछ निर्णय हो ही जाना चाहिए। अब यह आदमी एक क्षण भी भीतर नहीं रखा जा सकता।

उन चार सौ निन्यानबे शिष्यों ने गुरु से एक स्वर से प्रार्थना की कि अब हम सब एक स्वर में प्रार्थना करते हैं, इसे यहां नहीं रखा जा सकता। गुरु ने कहा, तुम सब अच्छे लोग हो, तुम कहीं और भी चले जाओगे, तो शायद वहां से भी तुम सत्य को खोज लोगे, लेकिन इसका क्या होगा? तो तुम जा सकते हो, इसे छोड़ दो। इसको तो मेरी बहुत जरूरत है। तुम मेरे बिना भी खोज लोगे, यह मेरे बिना न खोज पाएगा। इसे छोड़ना तो ऐसे

प्रश्न : क्या आप तामसी लोगों को भी अपने संन्यास में दीक्षित करते हैं?

आदमी शराब पीता है;
ध्यान गहरा होगा, छूट
जाएगी। क्योंकि मेरा
अनुभव यही है कि वह
शराब भी इसीलिए पीता
है कि एक तरह की ध्यान
की आकांक्षा है। कोई
और अमृतरूपी ध्यान उसे
पता नहीं है



होगा, जैसे कि चिकित्सक बीमार को छोड़ दे और स्वस्थ का इलाज करे।
तुम भले-चंगे हो; तुम जा सकते हो।

मेरे पास तो सब तरह के लोग आएंगे। अगर मैं उनके लिए हूँ जो स्वस्थ
हैं, तो मेरे होने का कोई अर्थ ही नहीं है। मैं उनके लिए भी हूँ जो अस्वस्थ हैं।
वस्तुतः तो उन्हीं के लिए हूँ।

मेरे पास रोज ऐसे मामले आते हैं। कोई आकर कहता है, फलां संन्यासी
ऐसा काम करता पाया गया। आप कुछ करते क्यों नहीं हैं? आप प्रोत्साहन देते
हैं। आप चुप हैं।

वह जो करता हुआ पाया गया है, वह तो स्थिति है, वह कोई नियति नहीं
है। उस स्थिति को बदलना है। और वह अकेला नहीं बदल सकता, इसलिए
तो मेरे पास आया है, नहीं तो खुद ही बदल लेता। वह अपने पैर से नहीं चल
सका, इसलिए तो मेरे सहारे आया है। अब मैं सहारा खींच लूँ?

और दुनिया में बुराई बढ़ती है, क्योंकि भले लोग बुरे आदमियों के हाथ
से सहारा छीन लेते हैं; उनको बुरा होने के लिए छोड़ देते हैं। जो उनकी स्थिति
है, उसको उनकी नियति मान लेते हैं।

जब भी मैं देखता हूँ कि कोई आदमी कुछ बुरा कर रहा है, तो मेरी इच्छा
यह नहीं होती कि उससे कहूँ कि तू बुरा मत कर। क्योंकि यह तो बहुत बार
उससे कहा गया है। अगर यही सुनकर वह ठीक हो सकता, तो ठीक हो गया
होता। यह कहना तो व्यर्थ की पुनरुक्ति होगी। यह तो मूढ़ता होगी। यह तो
कितने लोगों ने उससे नहीं कहा है कि बुरा मत कर।

मैं उससे बुरे की बात ही नहीं करता। मैं उससे कुछ और करने को कहता
हूँ। निषेध पर मेरा जोर नहीं है। मैं उससे कहता हूँ, ध्यान कर, प्रार्थना कर,
पूजा कर। मैं उसे कुछ करने में लगाना चाहता हूँ। न करने की बात नहीं
करता। जैसे-जैसे ध्यान गहरा होगा, कुछ चीजें छूटनी शुरू हो जाती हैं।

आदमी शराब पीता है; ध्यान गहरा होगा, छूट जाएगी। क्योंकि मेरा
अनुभव यही है कि वह शराब भी इसीलिए पीता है कि एक तरह की ध्यान की
आकांक्षा है। कोई और अमृतरूपी ध्यान उसे पता नहीं है। शराब सस्ती है,
बाजार में मिल जाती है। वह शराब पीकर अपने को भुलाने की कोशिश में
लगा है।

भुलाने की कोशिश वहां है। अगर उसे ध्यान की कोई विधि मिल जाए,
जिसमें वह सरलता से अपने को डुबा दे, तो शराब छूट जाएगी। उसका
प्रयोजन ही न रहा। धीरे-धीरे तो वह पाएगा कि ध्यान में वह इतना डूब जाता
है कि दुनिया की कोई शराब नहीं डुबा सकती। तब दुनिया की सब शराबें छूट
जाएंगी।

कोई व्यक्ति धन के पीछे पागल है, तो उसे रोकने का क्या प्रयोजन है?
धन में ही उसने कुछ चीज देखी है, कोई शाश्वत की थोड़ी-सी झलक देखी है।
बाकी सब चीजें तो बदल जाती हैं; इस संसार में धन थोड़ा-सा स्थिर मालूम
पड़ता है। प्रेम का भरोसा नहीं है; आज करे व्यक्ति, कल न करे। प्रियजनों का
भरोसा नहीं है; आज जिंदा है, कल मर जाए। आज मुंह है अपनी तरफ, कल
पीठ कर लें। धन साथी मालूम पड़ता है।

यह आदमी किसी साथी की तलाश में है। बाकी कोई भी साथी भरोसे योग्य नहीं मिलता। तो इसने धन से साथ जोड़ लिया है। इसको तुम कंजूस कहते हो, कृपण कहते हो। लेकिन गालियों से यह नहीं बदलने वाला। इसकी खोज भी बहुत गहरे में संग-साथ की चल रही है। कोई ऐसा साथ चाहता है जो कभी न छूटे। यह परमात्मा की खोज करना चाहता है। परमात्मा की छोटी-सी झलक, गलत ही सही, इसे धन में दिखाई पड़ी है। इसलिए तो ज्ञानियों ने परमात्मा को परम धन कहा है।

कोई आदमी किसी स्त्री के पीछे दीवाना है, या कोई किसी पुरुष के पीछे दीवाना है। उस पुरुष में कुछ परमात्मा की छाया दिखाई पड़ी है। इसलिए तो पत्नियों ने पति को परमात्मा कहा है। किसी स्त्री में किसी पुरुष को सौंदर्य के द्वार खुलते हुए दिखाई मालूम पड़े हैं। चाहे सदा खुले न रहे, चाहे जल्दी ही बंद हो जाएं, चाहे वे द्वार वस्तुतः वहां न हो, काल्पनिक हो, लेकिन कुछ दिखाई पड़ा है, कुछ अलौकिक, कोई ज्योति किसी और लोक की। उसी के पीछे आदमी पागल है। उसको रोकना क्या है? जिसके पीछे वह पागल है, उसकी और बड़ी झलक देना जरूरी है। रुक जाएगा।

अगर परमात्मा की सीधी झलक मिले, तो कौन उसे माध्यम से खोजना चाहता है। कौन फिक्र करता है फिर कि हम किसी पुरुष में या किसी स्त्री में उसके सौंदर्य को देखें! अगर उसका सौंदर्य सीधा दिख जाए, सामने आ जाए, आंख पर आ जाए, तो फिर कौन मध्यस्थ को लेना पंसद करेगा। क्योंकि मध्यस्थ में तो विकृति हो ही जाती है।

मैं तुमसे कहता हूँ; तुम कैसे हो, इसकी मैं चिंता नहीं करता, क्योंकि तुम जैसे हो, वह तुम्हारी स्थिति है तुम्हारा स्वभाव नहीं। मैं तुम्हारे स्वभाव को देखता हूँ। तुम्हारा स्वभाव परम है। तुम्हारा स्वभाव परमात्मा का स्वभाव है। उस पर कितनी ही राख की पर्तें जमी हों, मैं तुम्हारे भीतर के अंगार को देखता हूँ। तुम्हारी राख की पर्तों को झाड़ देंगे। राख की पर्तें हैं, कुछ बहुत झाड़ने में समय भी नहीं लगता। राख ही है, जरा-सा हवा का झोंका भी झाड़ देगा, भीतर का अंगार साफ हो जाएगा।

मैं तुम्हें राख में बहुत उत्सुक होने को भी नहीं कहता कि तुम इसे झाड़ने की पहले फिक्र करो। मैं तो कहता हूँ, तुम्हें भीतर के अंगारे का स्मरण आ जाए। राख रही तो, न रही तो, झाड़ गई। रही तो भी अंतर नहीं पड़ता, जिसको भीतर के अंगार का अनुभव होने लगा, वह क्या फिक्र करता है कि बाहर थोड़ी राख जमी है; जमी रहे।

अंगार की प्रतीति हो जानी चाहिए। भीतर के प्रभु का अनुभव हो जाना चाहिए। फिर तुम क्या करते हो, क्या नहीं करते हो, वह तुम जानो। इस भेद को ठीक से समझ लो।

मैं कोई नैतिक शिक्षक नहीं हूँ। तुम अगर तमस में हो, तो मेरे मन में तुम्हारे प्रति कोई निंदा नहीं है, न कोई अस्वीकार है। ठीक है। खूब हो, भले हो। कुछ हर्जा नहीं है। हर्ज तो तब होगा, जब तुम जिद्द करो इस तमस में रहने की।

तुम मेरे पास आए हो, वही बताता है कि तुम जिद्द तोड़ना चाहते हो।

मेरे पास तुम आए हो, वह बताता है कि तुम तमस के पार उठना चाहते हो। बस, काफी है। तुम्हारे लिए प्रमाण काफी है कि तुम खोज कर रहे हो कि कोई उपाय मिल जाए।

एक शराबी ने चार दिन पहले मुझे कहा कि छूटती नहीं। मैंने कहा, तू फिक्र ही छोड़ दे। छोड़ना भी क्या है? शराब ही पीता है; किसी का खून तो नहीं पी रहा! वह थोड़ा चौंका। उसने कहा, लेकिन शराब बड़ी बुरी चीज है। मैंने कहा, रहने दे बुरी है। बुरी पर ज्यादा ध्यान मत दे। क्योंकि जीवन के बड़े जटिल नियम हैं।

अगर तुम बुरे को छोड़ने पर ज्यादा ध्यान दो, तो तुम बुरे से ही आविष्ट होते जाओगे। जिस चीज पर ध्यान दो, उसी से सम्मोहन हो जाता है। आंख लगाकर देखते रहो किसी चीज को, तुम उसके प्रभाव में पड़ जाते हो।

तू छोड़ दे फिक्र। शराब की फिक्र मत कर, ध्यान की फिक्र कर। तेरी जीवन-ऊर्जा ध्यान की तरफ जाने लगे, किसी दिन अपने आप तू पाएगा, शराब गई। पता भी नहीं चलेगा, कैसे छूटी। पता चले, तो मजा नहीं रहा। छोड़ना पड़े, तो बात ही क्या हुई। छोड़-छोड़कर छोड़ी, तो क्या खाक छोड़ी। छोड़ी ही नहीं। छोड़-छोड़कर छोड़ी, तो रेखा छूट जाएगी, घाव बन जाएगा।

घाव बन जाए सदा के लिए, वह उचित नहीं है। फिर कभी गिरने का डर रहेगा। छूटनी चाहिए, छोड़नी नहीं चाहिए। कुछ विराट मिले, कुछ बड़ा मिले, तो छूट जाए। छूट जाती है।

इस संसार में कुछ भी नहीं है, जो तुम्हें परमात्मा के पास जाने से रोक सके। हां, तुम ही रुकना चाहो, तो बात अलग।

लेकिन जब तुम मेरे पास आए हो, तो उसका अर्थ है कि तुम जाना चाहते हो, बात पूरी हो गई। तुम तामसी हो, कि राजसी, कि सात्विक, कुछ अंतर नहीं पड़ता। तुम जहां हो, मैं वहां से काम शुरु करता हूँ। मेरे द्वार सबके लिए खुले हैं।

— ओशो

गीता दर्शन, भाग-आठ

अध्याय-18, प्रवचन-10, प्रश्न-4

(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)



एक स्कूल में अध्यापक ने पूछा : तुम्हारे पिता को दो सौ रुपये वेतन मिले, अगर उनमें से सौ रुपये वे तुम्हारी माता को दे दें, तो बताओ उनके पास क्या बचेगा?

छात्र : कुछ नहीं।

अध्यापक : क्यों?

छात्र : बाकी सौ रुपये मां अपने आप ही ले लेंगी।